आप बहुत लक्की हो। हाँ भी क्यों ना! स्वयं भगवान ने आपको सेलेक्ट कर विश्व परिवर्तन के कार्य हेतु अपनी भुजा बनाई। इस दुनिया में छोटा-सा स्टेटस पाने के लिए कितनी मेहनत करते, पर यहाँ स्वयं भगवान ने हमारे में वो खूबी देखी जो पूरे विश्व में सुख-शांति के साम्राज्य की स्थापना के लिए चुना। हमने छोड़ा ही क्या! पाया बहुत। जिसकी जीवन नैया का खिवैया स्वयं भगवान हो, उसको छोड़ने का क्या गम! छूटी भी तो बुराइयां, कमज़ोरियां, जो हमें जन्म-जन्म से तंग कर रही थी। तो ये हमारा सबसे बड़ा भाग्य है ना! तो बस, इस अवसर को नम्र बनकर निर्माण के कार्य में लगाएं।

युवाओं प्रति सम्बोधन...

नव निर्माण में नवीनता के साथ नम्र बनो

अपने को सदैव वेरी-वेरी लक्की समझो। वेरी लक्की समझने से विघ्न सहज ही विनाश कर सकेंगे। पता नहीं मेरी तकदीर में क्या है! ऐसा संकल्प उठाना माना संशय। मालूम नहीं - चल सकूंगा या नहीं, जाता हूँ ब्राह्मण परिवार में तो यह टक्कर आता, दुनिया में जाता तो यह विघ्न आते। आखिर क्या करूं! यह संकल्प भी संशय की निशानी है। मैं वेरी लक्की हूँ, लक्की उसको माना जाता जिसे दुनिया की अनेक ठोकरें आवें। पत्थर भी पूजनीय तभी बनता जब पानी की अनेक चोटें खाता। इसलिए कभी किन्हीं बातों से थको नहीं। मैं हमेशा समझती कि पेपर आना माना मुझे लक्की बनाना। विघ्न आना माना भाग्यवान बनाना। अगर पेपर ही नहीं दिया तो मुझे विजयी कौन मानेगा! हज़ार पेपर आयें तो भी मैं सौ प्रतिशत पास रहूँ। हरेक अपना-अपना पेपर लें। पढ़ाई ही मेरा पेपर है। सारा ब्राह्मण कुल मेरा मास्टर है। कोई भी मेरे सामने आता तो बुद्धि में यही रहता कि ये मेरे से कितनी रूहानियत भरकर जायेगा। जितना उसको आत्मिक शक्ति मिलेगी, बल मिलेगा, उतना ही मुझे मार्क्स मिलेंगी। हमें रूहानियत की आत्मिक शक्ति का दान देना है। जितना दाता बनो उतना पुण्यात्मा बनेंगे। मुझे नयनों से भी पुण्य करना है। अपनी रूहानियत की शक्ति का भी पुण्य देना है। मुझे देना सीखना है, मैं यह न सोचूं कि यह मुझे दे। मैं दाता हूँ। जितना मैं दूंगी उतना मेरा महत्व है। एक-एक को रूहानियत देना, शीतलता देना, यह देना ही मेरी महानता है। ऐसे नहीं मैं इसे स्नेह देती फिर भी यह मेरी ग्लानि करता। मुझे कोशिश करनी है एक भी काँटा न बने, अपना काम है सबको आत्मिक दान देना। दान देने में विघ्न तो अनेक आयेंगे क्योंकि दान लेने वाला कोई कैसा है, कोई कैसा। मैं हमेशा समझती- हर एक मेरे मास्टर हैं, मैं हर एक से सीखती हूँ।

नफरत ही है सभी झगड़ों का मूल

कभी भी अपने दिल में किसी के प्रति नफरत नहीं उठाओ। झगड़े का कारण है एक-दो से नफरत। जड़ होती नफरत, बन जाता परचिन्तन, हो जाता दुश्मन। पहले होगी ईर्ष्या, वह पैदा करेगी नफरत, फिर परचिन्तन चलेगा, जिसका परचिन्तन करते वह दुश्मन बन जाता। एक बोल जीवन भर के लिए दुश्मन बना देता। एक ऐसा शब्द भी बोला जो किसी के हार्ट पर लग गया तो वह जिन्दगी भर दुश्मन बना देता। मैं ऐसा क्यों करूं!

ज़िद का संस्कार धोखे में डालता

ब्राह्मणों में सबसे बड़े से बड़ा नुकसान कारक अवगुण है- "ज़िद का स्वभाव", जिसमें ज़िद है उस पर मुझे बड़ा रहम आता। वह बड़ा धोखा खाते। सबसे ज़्यादा नुकसान इस ज़िद से होता है। ज़िद मनुष्य को रसातल पहुँचा देता। इसलिए कभी किसी बात का ज़िद नहीं करना। कोई रॉन्ग है तो राइटियस बुद्धि से निर्णय करना है। ज़िद के स्वभाव से अपने को धोखा न दो। निर्णय करो। एक-दो को सहयोग दो, राय दो, अगर कोई ज़िद पकड़ता है तो।

आप हल्के हो जाओ, लाइट हो जाओ। स्वयं को लाइट और माइट की मस्ती में रखो तो कभी जोश नहीं आयेगा।

निर्मान बनना माना समा लेना

नव निर्माण के कार्य के लिए नम्र बनो। पुरुषार्थ से डरो नहीं। जब कोई फोर्स से कुछ कहता है तो उस समय उसको मान लो। आप शीतल बन जाओ। अगर उस बात को लेकर दुश्मनी हो जाती तो नुकसान होता है। इसलिए बाद में आपस में मिलकर मीठी धारणा की रूह-रिहान करो, डिबेट नहीं करो। आपकी नम्रता का प्रभाव दूसरे पर ज़रूर पड़ेगा। एक की चर्चा दूसरे से नहीं करो। निर्मान बनना माना समा लेना। जब कोई बात आपस में नहीं बनती तो उसको छोड़कर स्व-चिन्तन में रहो। झगड़े में पड़कर ज्ञान को नहीं छोड़ो।

मर्यादा में हल्के तो निंदा के पात्र

हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का फाउण्डेशन है ईश्वरीय मर्यादा। दुनिया में मर्यादा नहीं, हमारी है टॉप मर्यादा। अगर हम किसी पर फेथ रखते हैं, तो फेथ पर भी माया पानी डाल देती है। ऐसे अनेक अनुभव देखते हैं। इसलिए हम कन्ट्रोल करते... कुमार-कुमारियाँ मर्यादा में रहो। एक की गलती से सारे ब्राह्मणों को चोट लग जाती है। एक के कारण हमें सबको बांधना पड़ता है। सेन्टर पर कुमारियाँ अकेली रहती, आप उनसे बैठकर बातें करो- यह मर्यादा नहीं है। मैं कहती इस बात में समझो हम सन्यासी हैं। कुमार-कुमारी माना सन्यासी। सन्यासी माना हँसना, बोलना, वृत्ति-दृष्टि सबका सन्यास। जितना यह पाठ पक्का रखेंगे उतना अच्छा। अगर मर्यादा में हल्के रहेंगे तो टीका होगी। किसी के कैरेक्टर पर दाग लगे, यह मेरे से सुना नहीं जाता, शॉक लगाता। कोई मेरे कैरेक्टर पर आँच डाले यह मेरे जीवन के लिए बहुत बड़ा दाग है। परन्तु किसी का क्वेश्चन क्यों उठा- क्योंकि हल्के होकर चले।

शंघाई-चाइना। 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर शंघाई में भारतीय वाणिज्य दूतावास में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में उपस्थित, ... दक्षिण अफ्रीका के महावाणिज्य दूत, शंघाई के कुछ प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों, संस्थानों के प्रशासक, विद्वान, ब्र.कु. सपना बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

नई दिल्ली-हरि नगर। सेवाकेन्द्र पर बच्चों के लिए 4 दिवसीय समर कैंप के समापन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागी बच्चों के साथ ब्र.कु. ..., सेवानिवृत्त प्रिंसिपल ..., प्रिंसिपल ... तथा अन्य।

ईश्वरीय मर्यादा इस जीवन का आदेश

ईश्वरीय मर्यादा हमारे जीवन का ऑर्डर है। बाकी कोई ऑर्डर नहीं। इसमें जितना अपनी रूहानियत में मस्त रहो, मेरा एक बाबा उसी मस्ती में रहो, यह कंगन बहुत स्ट्रिक्ट बंधा हुआ चाहिए। मैं जब यह बात बोलती तो समझते यह मार्ग तो बड़ा कठिन है। फिर बुद्धि जाती गन्धर्वी विवाह में। लेकिन जिन्होंने किया वह अभी आँसू बहा रहे हैं, रो रहे हैं। इसलिए कभी भी यह संकल्प नहीं आवे। ऐसे नहीं कम्पैनियन चाहिए। मरना तो पूरा मरना। जीने का नहीं सोचो। हमें बाबा की गोदी में जीना है। दुनिया से हम मर गये। खाने का, पहनने का, नींद का सब ऐश चला गया। हम सब त्याग चुके। त्याग माना त्याग। जिसने नींद का त्याग किया उसने सब त्यागा। 3:30 बजे मीठी नींद आती। बाबा कहता उठ। वह भी बाबा ने छीन लिया, बाकी क्या चाहिए? इसलिए हमेशा बाबा कहता बेहद के वैरागी बनो। जितना वैरागी उतना योगी रहते।

सब सेवा में सफल करो, कल किसने देखा

सेवा तो आप लोग कर ही रहे हो, जो कुछ भी है उसे सफल करते चलो। कल का क्या पता। जितना बुद्धि में सेवा है, उतना ही महान भाग्य है। परन्तु सेवा के जोश के साथ-साथ होश भी चाहिए। लौकिक को भी थोड़ा चलाना करना ठीक रहता। नहीं तो सर्विस में डिस-सर्विस हो जाती। जितना सर्विस में बुद्धि लगी रहे उतना अच्छा है, आर्टिकल लिखो, डायलॉग लिखो, अनुभव लिखो, आर्टिस्ट बनो। किसी न किसी कार्य में बुद्धि लगी रहे। सब आर्ट सीखो, वक्त पर सब काम आता है।